ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड VII अंक III

जून, 2015

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- कौशल विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला में कृषि उद्यमियों की सहभागिता
- इस माह के कृषि उद्यमी : श्री. चिन्नप्पा ज़लाकी
- इस माह का संस्थान : सीएआरडी-मुज़फ्फरनगर
- कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी वेबसाइट

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

कौशल विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला में कृषि उद्यमियों की सहभागिता

कृषि विस्तार सदन, नई दिल्ली में दिनांक 30 जून, 2015 को कृषि विस्तारण के उप-लक्ष्य (एसएएमई) के कौशल विकास घटकों के अंतर्गत कार्यक्रमों के कार्यान्वियन पर कार्यशाला आयोजित की गयी। एसएएमई के अंतर्गत कौशल विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वियन को सदृढ़ बनाने के लिए इस कार्यशाला का संचालन किया गया था। श्री. नरेंद्र भूषण, आईएएस, संयुक्त सचिव (विस्तारण और सूचना प्रौद्योगिकी) ने सत्र की अध्यक्षता की।

कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग, पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग (डीएएचडीएफ़), कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज), चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान (एनआईएएम), विस्तारण शिक्षा संस्थान (ईईआई), राज्य कृषि प्रबंध एवं विस्तारण प्रशिक्षण संस्थान (एसएएमईटीआई), एसी और एबीसी योजना के नोडल प्रशिक्षण संस्थान (एनटीआईएस), कृषि उद्यमी, कृषि-निवेश वितरक, भारत का कृषि कौशल परिषद (एएससीआई), विस्तारण निदेशालय (डीओई) के प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कौशल विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वियन को सदृढ़ बनाने के लिए इस कार्यशाला का संचालन

एसी और एबीसी योजना के चार सफल कृषिउद्यमियों अर्थात जोरहाट, असम के श्री. समीर रंजन बोर्डोलाइ, हैदराबाद, तेलंगाना, के श्री. एम. नाजराजू, अहमदाबाद, गुजरात के डॉ. गजेंद्रकुमार बामनिया और शिर्डी, महाराष्ट्र के श्री. अविनाश निवृत्ति सालुङ्के ने अपने अनुभवों को कार्यशाला में बाटा।

ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस सेंटर योजना के परिचालन के तरीके, डिप्लोमा इन एग्रिकल्चरल एक्सटैन्शन सर्विसेस फॉर इनपुट डीलर (डीएईएसआई) पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया गया। इस कार्यशाला में दो नई परियोजिनाओं स्किल ट्रेनिंग फॉर रुरल यूथ (एसटीआरवाई) और फार्मर्स कैपासिटी असेस्मन्ट एंड सर्टिफिकेशन (एफ़सीएसी) पर महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुये। एसटीआरवाई का उदेश्य युवाओं को रोजगार प्राप्त करने हेतु कृषि में प्रशिक्षण प्रदान करना है। एफ़सीएसी का उद्देश्य कृषकों के कौशल को पहचानना, उनके कौशल का आंकलन करना और उनका प्रमाणीकरण करना जो न केवल कृषक को पहचान देगा बल्कि रोजगार का अवसर भी प्रदान करेगा।

राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान,

कृषि सहयोग और कृषि किसान कल्याण मंत्रालय

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

जब एक बैंकर कृषि उद्यमी की राह पर चलता है

सहकारी क्षेत्र राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पिछले कुछ दशकों में, इस कार्यक्षेत्र ने अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में काफी वृद्धि देखी है। सहकारिता की इसी पुष्ठभूमि से उत्साहित होकर, हुब्बल्ली, कर्नाटक के श्री. चन्नप्पा ज़लाकी (66), एक बैंकर ने कृषि क्षेत्र में स्वयं की सहकारिता समिति आरंभ करने का निर्णय लिया। बैंकिंग के क्षेत्र में 32 वर्षों तक कार्य करने के पश्चात, उनकी इच्छा थी कि वें आपने गाँव जाकर सकारात्मक रूप से कृषक समुदाय को अपनी सेवा प्रदान करें। कृषि में स्नातकोत्तर, उन्होंने श्री. श्री. इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रिकल्चरल साइन्स एंड टेक्नालजी ट्रस्ट, बैंग्लोर से एसी और एबीसी योजना के दो-माह के अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा किया। प्रशिक्षण के दौरान, श्री. ज़लाकी को विभिन्न स्थापित ऐग्रीवेंचरों का दौरा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैनज द्वारा बनाए गए प्रशिक्षण मॉड्यूल को सराहते हुए, वे कहते है, “एसी और एबीसी प्रशिक्षण व्याख्यान, प्रदर्शन दौरे, और आभ्यासिक सत्र का एक विवेकपूर्ण मिश्रण है। स्रोत व्यक्तियों द्वारा उपाख्यानों से सजे व्याख्यान, सफल उद्यमियों से साक्षात्कार और उनकी उल्लेखनीय सफलताओं को सुनना प्रेरणादायक और प्रशंसनीय है। इस प्रशिक्षण से मुझे मेरी उद्यमी कौशल को हर संभव तरीकों से सुधारने में मदद मिली”।

श्री. बासवेश्वर सौहर्धन सहकारी नियमिता, हुब्ली द्वारा आयोजित किया गया परिणाम प्रदर्शन।

श्री. चिन्नप्पा जल्कि, कृषि उद्यमी

प्रशिक्षण के सफलतापूर्वक समाप्ती के पश्चात, श्री.ज़लाकी ने पाँच साल पुरानी निष्क्रिय सहकारी समिति “श्री. बासावेश्वर सौहरधा सहकारी नियमिता, हुब्ली” में पुनः प्राण भरने का बिढ़ा उठाया। सहकारी समिति का मुख्य उद्देश्य सीधे तौर पर कृषकों का संपर्क उपभोगताओं से करवाना था ताकि कृषकों को उनके उत्पादों का अच्छा मूल्य प्राप्त हो सके। कर्नाटक के तीन जिले यानि धारवाड़, हावेरी और रानेबेन्नूर के कृषकों को इस सहकारी समिति की सेवाएँ प्राप्त हो रही थी। यह 150 प्रतिष्ठित सहकारी समितियों के द्वारा उर्वरकों, कीटनाशकों और बीजों के व्यापार और बिक्री में भी शामिल था। समितियों के लिए कार्य कर रहे बिक्री अधिकारी सहकारियों और कृषकों के बीच की कड़ी है। सहकारी समिति ने 175 गाँवों और 3000 कृषकों के लिए दो खुदरा दुकान और एक थोक व्यापार की दुकान स्थापित की। एग्रिकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट कमेटी (एपीएमसी) बाजार/सब्जी बाजार/स्थानीय बाज़ार क्षेत्र में जहां कृषक रोज़ अपने खेती के उत्पादों की बिक्री और खरीदी के लिए आते है उस परिसर में इसे स्थापित किए जाने के कारण, कृषकों को बहुत लाभ प्राप्त हुआ। कम अवधि में ही, इस समिति ने अपने रु.1500 लाख के वार्षिक कारोबार को पार करके उल्लेखनीय वृद्धि की है। कई गतिविधियों में शामिल होने के कारण, यह समिति इन तीन जिलों में ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार उपलब्ध करवा पाया है। हर खुदरा दुकान में मृदा जांच प्रयोगशाला स्थापित करना और इसकी सेवाओं को कर्नाटक के अन्य तीन जिलों तक फैलाना इस समिति की भविषय योजना है। निकट भविष्य में गन्ने के अवशेषों के प्रयोग से जैविक-उर्वरक बनाने हेतु एक एकक स्थापित करने की भी योजना है। काबिल कृषिउद्यमियों के लिए श्री.ज़लाकी का संदेश है, “समझदारी से निवेश करें, ध्यान से विविधता लाये और पूर्ण रूप से स्थापित करें”।

श्री. चिन्नप्पा जी. ज़लाकी

एच.सं. 58, पाटिल लेआउट 2 क्रॉस, लिंगराज नगर (उत्तर), हुब्बली जिला: धारवाड़, कर्नाटक राज्य पिन: 580031

मोबाइल: 09448590575, ईमेल आईडी : cgzalaki@gmail.com

श्री शकील खान
नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी)
पता: ऐग्री-क्लीनिक एंड ऐग्री-बिज़नस प्रशिक्षण केंद्र, रेशु चौक, सर्क्युलर रोड, श्री साई अस्पताल के पास, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश -251 001
मोबाइल नं.: 09997286694
ईमेल: shakeel@card.org.in
वेबसाइट: www.card.org.in
प्रशिक्षण की संख्या: 32
प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की संख्या: 1005
स्थापित वेंचरों की संख्या: 479
सफलता दर: 47.66%
स्थापित ऐग्री-वेंचर: ऐग्री-क्लीनिक, डेयरी एकक, कुक्कड पालन, बागबानी नर्सरी, जैव-उर्वरक एकक, केंचुआ खाद एकक, बीज उत्पादन एकक, कृषि-व्यवसाय केंद्र, ग्रामीण विपणन डीलरशिप, दूध संग्रह केंद्र, मधुमक्खी पालन, सूअर पालन, पुष्पकृषि, गुड प्रक्रमण एकक, आदि।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों (एनईआर) में कृषि-व्यवसाय को बढ़ावा देना

कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी) ने उत्तर-पूर्व सम्मिट 2015 के एक भाग के रूप में 26 मई, 2015 को विकास बैठक आयोजित की। इस बैठक का उद्देश्य था इस प्रांत के ग्रामीण क्षेत्रों के एकीकृत विकास हेतु अवसरों को ढूँढना। डॉ. के.एल चढ़ा, भारतीय बागबानी क्रांति के पथ प्रदर्शक ने इस बैठक की अध्यक्षता की। इस विकास प्रक्रिया में एसी और एबीसी योजना की भूमिका पर भी चर्चा की गई। यह बैठक निम्नलिखित अनुशंसाओं पर पहुँची।

कार्ड द्वारा गुवाहाटी में व्यापर विकास मंच का आयोजन

कुक्कुट पालन उद्योग का विकास: सीएआरडी द्वारा प्रस्तावित किया गया कि लगभग 25,000 पक्षियों का एक मुख्य एकक और लगभग 2000 पक्षियों की ब्लॉक स्तर उपग्रह इकाई, दोनों ही एक-एक जिले को नमूने के रूप में ले कर कुक्कुट पालन पार्क स्थापित कर इस प्रांत में वाणिज्यिक पोल्ट्री उत्पादन विकसित करें। कार्बनिक जोन के रूप में एनईआर: इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए सभी स्टेकहोल्डरों को काम पे लगाने के लिए सीएआरडी ने एक अंतरराष्ट्रीय जैविक काँग्रेस आयोजित करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

व्यावसायिक मत्स्यपालन, सूअरपालन एवं डेयरी उत्पादन: सीएआरडी ने व्यावसायिक मत्स्यपालन, सुअरपालन एवं डेयरी उत्पादन को प्रोत्साहित करना भी प्रस्तावित किया। ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस केंद्र: सीएआरडी ने मैनज और एनईआर के प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ मिलकर प्रशिक्षित स्नातकों को ऐग्रीवैंचर स्थापित करने में मदद करने का प्रस्ताव रखा। उनके विचार से पूरे क्षेत्र के लिए इसे एक एकीकृत मंच से प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है।

कृषि उत्पादों का विपणन एवं प्रक्रमण: बैठक में यह निर्णय लिया गया कि जैसा कि एनईआर में फलों, सब्जियों और मसालों का उत्पादन अधिक है अतः ऐग्रो-प्रक्रमण उद्योगों में अधिक क्षमता है। यह भी प्रस्तावित किया गया कि कृषकों के डेटाबेस के लिए पोर्टल बनाया जाए और फसल आधारित विशिष्ट कार्य-प्रणालियाँ उपलब्ध कारवाई जाए।

उत्तर पूर्वी ग्रामीण शिल्प उत्पादों का विपणन: सीएआरडी ने प्रौद्योगिकी को अपनाने और इस प्रांत से ग्रामीण शिल्प उत्पादों के विपणन को आसान बनाने के लिए एक संवादमूलक पोर्टल www.ruralbazarofnortheast.com को परिचालित करने का सुझाव दिया। सीएआरडी ने एक सक्रिय सुविधाप्रदाता की भूमिका निभाने का प्रस्ताव रखा। इस संदर्भ में एक अनुकूल प्रस्ताव उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास विभाग (डीओएनईआर) को भेजा जाएगा।

कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी वेबसाइट

कृषि विपणन	:	http://agmarknet.nic.in
राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना	:	http://dacnet.nic.in/AMMP/AMMP.htm
कृषकों का पोर्टल	:	http://farmer.gov.in
किसान एसएमएस	:	http://mkisan.gov.in
पादप संगरोध सूचना प्रणाली	:	http://plantquarantineindia.nic.in
केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति	:	http://cibrc.nic.in
भारतीय मृदा एवं भू-उपयोग सर्वेक्षण	:	http://slusi.dacnet.nic.in
विस्तारण सुधार	:	http://extensionreforms.dacnet.nic.in
बागबानी	:	http://hortnet.gov.in
आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय	:	http://dacnet.nic.in
कृषि यंत्रीकरण	:	http://farmech.gov.in
किसान ज्ञान प्रबंधन प्रणाली	:	http://dackkms.gov.in/Account/Login.aspx
दूरदर्शन की कार्यक्रम सूची	:	http://navkrishi.dacnet.nic.in
राष्ट्रीय कृषि विकास योजना	:	http://rkvy.nic.in
सीड नेट	:	http://seednet.gov.in

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

"कृषि उद्यमी" श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

मुख्य संपादक : श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली